

खण्ड- स

बर्ग चक्र

9.1.19.1

_____ ◆ _____

तबला एव पञ्चाव

खण्ड-‘स’
वर्ग-नवम्
तबला एवं पखावज

परिभाषा

- ताल - संगीत में समय मापने की इकाई को ताल कहते हैं।
- मात्रा - संगीत को समय में बाँधने के गिनती को मात्रा कहते हैं।
- लय - संगीत में गति अथवा चाल को लय कहते हैं।
- लय तीन हैं :
- (1) विलम्बित लय : वह लय जो मंद गति में हो।
 - (2) मध्य लय : जो न धीमी गति में हो न तेज गति में।
 - (3) द्रुत लय : वह लय जो तेज गति में हो।
- विभाग - खड़ी रेखा के द्वारा ताल की मात्राओं को छोटे-छोटे खण्ड में बाँटने को विभाग कहते हैं।
- सम - जिस मात्रा से तबला या ताल वाद्य बजना शुरू होता है, उस मात्रा को सम कहते हैं।
- ताली - ताल के ठेके को तालक्रम में जिस मात्रा पर एक हाथ को दूसरे हाथ से टकराते हैं, उस मात्रा पर ताली होती है। हम कह सकते हैं कि एक हाथ को दूसरे हाथ से टकराने को ताली कहते हैं।
- खाली - ताल देने के क्रम में हाथ को हवा में बाहर मात्रा दिखाने को खाली कहते हैं।
- कायदा - बोलों को लय एवं ताल में खुली मुँदी के साथ-बजाने को कायदा कहते हैं। तबला सोलो वादन में इसका प्रयोग ज्यादा होता है।
- पल्टा - कायदा के बोलों को भिन्न-भिन्न प्रकार से बजाने को पल्टा कहते हैं।
- तिहाई - एक ही बोल समूह को तीन बार बजाकर सम पर आने को तिहाई कहते हैं।
- मोहरा - वैसे कोमल बोलों का छोटा समूह जो किसी भी मात्रों से चलकर सम पर आ जाये, उसे मोहरा कहते हैं।
- मुखड़ा - मोहरा से बड़ा लेकिन टुकड़ा से छोटा जोरदार बोल समूह गाने बजाने के क्रम में सम पर आता है, उसे मुखड़ा कहते हैं।
- कुछ लोग इसे छोटे-उठान के रूप में भी प्रयोग करते हैं।

टुकड़ा - कुछ त्रोल समूह बजाकर एक या एक से अधिक आवर्तन में तिहाई के साथ सम पर आने को टुकड़ा कहते हैं।

टुकड़े का कायदा, रेला, लगी, लड़ी जैसा विस्तार नहीं होता है। टुकड़े छोटा और बड़ा दोनों प्रकार के होते हैं।

संगीत - गायन, वादन और नृत्य के संगम को संगीत कहते हैं।

प्रश्न और अभ्यास :

1. निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा लिखें :

ताल, मात्रा, लय, विभाग, सम।

2. निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा लिखें :

ताली, खाली, कायदा, पल्ल-तिहाई, मोहरा, मुखड़ा, टुकड़ा एवं संगीत।

तबले का सचित्र वर्णन

तबला



तबले का वर्ण

दायें हाथ से तबले पर बजने वाले वर्ण

तबले के मुख्य दस वर्ण हैं :

- (1) ता या ना
- (2) ति
- (3) दिं या चुं
- (4) तू या तिं
- (5) ते
- (6) टे या रे

बायें हाथ से बायाँ पर बजने वाले वर्ण

- (7) गे या धे
- (8) क, के, की, क, त

दोनों हाथ से बजने वाले वर्ण

(9) धा

(10) धिं

वर्णों को बजाने की विधि

- (1) ता या ना – दाहिने पर मध्यम अंगुली को बगैर स्पर्श किये मध्यमा से आघात करने पर ता या ना निकलता है।
- (2) तिं या तीं – तर्जनी से सिर्फ दाहिने के लव पर मारने से निकलता है।
- (3) दिं या युं – दाहिने हाथ की पांच अंगुलियों को मिलाकर स्याही के ऊपर आघात करने से निकलता है।
- (4) तू या तीं – तर्जनी से दाहिनी ओर बीच में स्याही के किनारे मारने से निकलता है।
- (5) ती या ते – मध्यम अंगुली से स्याही के बीच में आघात करने से निकलता है।
- (6) रे या टे – मध्यम अंगुली से स्याही के बीच में दबाकर आघात करने से रे या टे निकलता है।

बायाँ पर बजने वाले वर्ण

- (7) गे या धे – बायें हाथ के तर्जनी या मध्यमा अंगुली से लव पर आघात करने से निकलता है।
- (8) क, के, की कत – बायें हाथ की अंगुलियों को मिलाकर एक साथ आघात करने से निकलता है।
- (9) धा – दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली और बायें हाथ की मध्यमा या तर्जनी अंगुली दोनों से एक साथ आघात करने पर धा निकलता है।
- (10) धिं – धा के समान ही लव पर मारने से धिं निकलता है।

तबले के अंगों का सचित्र वर्णन

दायाँ :

- (1) लकड़ी – लकड़ी के ऊपर सम्पूर्ण चीजें लगाकर तैयार होने पर उसे दाहिना या तबला बोला जाता है।

- (2) बद्धी - यह चमड़े की होती है।
- (3) गट्टा - लकड़ी का बेलनाकार जो कि बद्धी से दबा रहता है, इसे गट्टा कहते हैं।
- (4) गजरा - यह पूड़ी के चारों ओर चमड़े से गुंथी हुई होती है।
- (5) गुड़की - यह चमड़े की बद्धी द्वारा ही बनती हैं लेकिन तबलें के नीचे होती है।
- (6) घट - गजेट में 16 छिद्रों को घट कहते हैं।
- (7) पूड़ी - यह बकरे के खाल की होती है जिसमें बीचोबीच स्याही लगी रहती है।
- (8) लव - स्याही और चोटी के बीच की जगह को लव कहते हैं।
- (9) चाँटी - किनारी को चाँटी कहते हैं।
- (10) स्याही - तबले पर गोलाकार काले मसाला लगे हुये भाग को स्याही कहते हैं।

बायाँ

- (1) कूँड़ी - यह मिट्टी या धातु की बनी होती है।
- (2) बद्धी - यह चमड़े की होती हैं जो कूँड़ी को कसे रहती है।
- (3) डोरी - बायाँ में बद्धी के जगह पर इसे भी लगाया जाता है।
- (4) छल्ला - बायें की पूड़ी को कसने के लिये डोरी में लगा दिया जाता है।
- (5) मैदान - जो दायाँ में लव होता है उसी तरह बायाँ में मैदान होता है।
- (6) पूड़ी - दाहिने की तरह इसमें भी पूड़ी रहती है।

तबले के अंगों का सचित्र वर्णन

- (7) गोट - जो दायाँ में चोटी कहलाता है वही बायाँ में गोट होता है।
- (8) स्याही - बायाँ में कुछ किनारे पर दायाँ की भाँति गोलाकार काले रंग के मसाले को स्याही कहते हैं।
- (9) गजरा - जिसमें से होकर डोरी या बद्धी लगी रहती हैं उसे गजरा कहते हैं।

(10) घट - डोरी कसने के लिये जो 16 छिद्र होता है। उसे घट कहते हैं।

(11) गुड़टी - बायों के पेंदी वाले भाग में चमड़े की गुंथी हुई गोलाकार भाग को जिसमें डोरी या बद्धी लगी रहती है, गुड़टी कहते हैं।

प्रश्न एवं अभ्यास :

- (1) तबला के वर्णों को लिखें।
- (2) तबला के वर्णों को बजाने का स्थान बतायें।
- (3) तबले का चित्र बनाकर उसके अंगों को लिखें।
- (4) पखावज का चित्र बनाकर उसके अंगों का वर्णन करें।
- (5) पखावज के वर्णों को लिखें।

तबला एवं पखावज (मृदंग)

तीनताल

तीनताल तबले का प्रचलित ताल है। इस ताल में स्वतंत्रवादन, गायन, तंत्र वाद्य, नृत्य आदि संगीत की सभी विद्याओं का सौन्दर्य देखने में बनता है।

मात्रा-16, विभाग-4, खाली 9 पर तथा ताली 1, 5, 13 पर होता है। तीनताल का ठेका-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ना	धिं	धि	ना	ना	धिं	धिं	ना	ना	तिं	तिं	ना	ना	धिं	धि	ना
x				2				0				3			

दादरा

दादरा ताल होने के साथ-साथ एक प्रकार की गायकी का भी नाम है, लेकिन इसमें भी दादरा ताल का ही प्रयोग होता है। उत्तर भारत में दादरा ताल की सुगंध गाँव के गली-गली में लोक संगीत, भाव संगीत, भजन, फिल्म संगीत आदि के माध्यम से फैली हुई है। तबला, नाल, ढोलक आदि वाद्य-यंत्रों पर इसकी सुन्दरता देखते ही बनती है। इसकी लगी और लड़ियाँ हृदय को छूती है। इसमें मात्रा-06, विभाग-2, ताली-1 पर और खाली 4 पर दादरा ताल का ठेका.....हैं।

1	2	3	4	5	6
धा	धि	ना	धा	ति	ना
x					

कहरवा

दादरा की तरह कहरवा ताल भी तबला, नाल, ढोलक आदि पर लोकगीत, भावगीत, फिल्म संगीत, गजल आदि के साथ संगत करने की ताल है। इसकी प्रकृति चंचल है। इसमें लगी, लड़ी तथा ठेका की किस्में आदि का प्रयोग किया जाता है।

मात्रा-8, विभाग-2, ताली-1 पर तथा खाली 5 पर।

ठेका-	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	न	ति	न	क	धि	न
x					0			

चारताल

चारताल पखावज (मृदंग) पर बजाने की ताल है। ध्रुपद अंग की गायकी के साथ चारताल का प्रयोग होता है। इस ताल में स्वतंत्र वादन भी किया जाता है। टुकड़ा, परन, रेला आदि का प्रयोग इसकी विशेषता है। इसमें चार तालियाँ पड़ने के फलस्वरूप इसका नाम चारताल पड़ा।

मात्रा- 12, विभाग-6, ताली 1, 5, 9, 11 पर तथा खाली 3, 7 पर।

ठेका-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तेटे	कत	गदि	गन
x		0		2		0		3		4	

सूलताल या सूल फाकताल

सूलताल पखावज का ताल है। ध्रुपद अंग की गायकी के साथ संगत करने के अलावा इसमें स्वतंत्र वादन भी किया जाता है। इसमें परन, टुकड़ा, रेला आदि बजाया जाता है।

मात्रा-10, विभाग-5, ताली 1, 5, 7 पर तथा खाली 3, 9 पर।

ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	तेटे	कत	गदि	गन
x		0		2		3		0	

प्रश्न और अभ्यास :

1. तीनताल एवं दादरा ताल के ठेके को भात-खण्डे ताल लिपि पद्धति में लिखें।
2. कहरवा, चारताल और सूलताल के ठेके को उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में लिखें।
3. तीन-ताल में कितनी मात्रायें होती हैं।
(क) 16 (ख) 2 (ग) 10 (घ) 8
4. झपताल में ताली की संख्या कितनी है।
(क) 4 (ख) 5 (ग) 2 (घ) 3
5. चारताल में कितने विभाग होते हैं।
(क) 3 (ख) 4 (ग) 2 (घ) 5

तीनताल

कायदा न० 1

धा धा ते टे धा धा तिं ना ता ता ते टे धा धा धिं ना
X 2 0 3

पल्टा :

(1) धा धा ते टे धा धा ते टे धा धा ते टे धा धा तिं ना खुली
X 2 0 3

ता ता ते टे ता ता तेटे धा धा तेटे धा धा धिं ना मुदी
X 2 0 3

(2) धा धा ते टे धा ते टे धा धा धा ते टे धा धा तिं ना खुली
X 2 0 3

ता ता ते टे ता ते टे ता धा धा ते टे धा धा धिं ना मुदी
X 2 0 3

तिहाई :

धा धा ते टे धा धा तिं ना धा S S S धा धा ते टे
X 2 0 3

धा धा तिं ना धा S S S धा धा ते टे धा धा तिं ना धा
X 2 0 3 X

कायदा न० 2

धा धा तिरकिट धा धा तिं ना ता ता तिरकिट धा धा धिं ना
X 2 0 3

पल्टा :

(1) धा धा तिरकिट धा धा तिरकिट धा धा तिरकिट धा धा तिं ना
X 2 0 3

ता ता तिरकिट ता ता तिरकिट धा धा तिरकिट धा धा धिं ना
X 2 0 3

(2) धा धा तिरकिट धा तिर किट धा धा तिर किट धा धा तिं ना

x 2 0 3

ता ता तिरकिट ता तिर किट ना धा धा तिर किट धा धा धिं ना

x 2 0 3

तिहाई :

धा धा तिरकिट धा धा तिं ना धा ऽ ऽ ऽ धा धा तिर किट

x 2 0 3

धा धा तिं ना धा ऽ ऽ ऽ धा धा तिर किट धा धा ति ना धा

x 2 0 3 x

तीनताल में दो मोहरा

ना धिं धिं ना ना धिं धिं ना ना तिं तिं ना तिटकिट तकतिर किटतक तिरकिट
धा

2 0 3 x

ना धिं धिं ना ना धिं धिं ना ना तिं तिं ना किटतक तिरकिट तकताऽ तिरकिट
धा

x 2 0 3

x

तीन ताल में दो टुकड़ा :

(1) धाति धाऽ तिरकिट धाऽ धाऽतिर किटतक ताऽतिर किटतक

x 2

धाऽतिर किटतक धा धाऽतिर किटतक धा धाऽतिर किटतक धा

0 3 x

(2) कच तेते धेधे तेते कत कत धेधे तेते

x 2

कत धेधे तेते कत धा कत धा कत धा

0 3 x

दादरा ताल में लग्गी-लड़ी

(1) धागे धिन गिन धागे तिन गिन

x 0

(2) धातिर किटघा गेन धागे तिन गिन

x 0

तातिर किटघा गेन धागे धि न गिन

x 0

(3) धिन घेड़ नग धिन तिन किन

x 0

तिन केड़ नग धिन तिन किन

x 0

(4) धिन घेड़ नग नग धाति किन

x 0

तिन केड़ नग नग धाति गिन

x 0

(5) धिन धाति किन धिन धाति गिन

x 0

लड़ी :

(1) धिन घेड़ नग धिन धाति किन

x 0

तिन केड़ नग धिन धाति गिन

0

(2) घेड़ नग घेड़ नग धाति किन

x 0

केड़ नग केड़ नग धाति गिन

x 0

कहरवा ताल में लगी लड़ी

लगी :

	धिक	नाधि	कधि	नाऽ	तिक	ना धि	कधि	नाड़
	X				0			
(2)	नाधि	कधि	नाधि	कधि	नाधि	कधि	कधि	नाड़
	X				0			
	नाति	कति	नाति	कति	नाधि	कधि	कधि	नाड़
	X				0			
(3)	घेन	नाधि	कधि	नाड़	केंन	नाधि	कधि	नाड़
	X				0			
(4)	घाड़	घाड़	नाधि	कधि	नाड़	नाड़	घाधि	कधि
	X				0			
(5)	घाड़	कधि	कधि	नाड़	नाड़	कधि	कधि	नाड़
	X							

लड़ी :

(1)	धिंन	ताधि	नधि	नाड़	तिंन	ताधि	नधि	नाड़
	X				0			
(2)	तिरकिट	तकनिट	किटतक	तिरकिट	धिंन	ताधि	नधि	नाड़
	X				0			
(3)	तिरकिट	तकतिट	किटतक	तिटकिट	धागे	नधि	कधि	नाड़
	X				0			
(4)	धागे	नधि	कधि	नाड़	धागे	नधि	कति	नाड़
	X				0			

चारताल में दो टुकड़ा :

(1)	धागे	तेटे	धागे	तेटे	तागे	तेटे	तागे	तेटे	क्रिथे	तेटे	केत	टेत
	X		0		2		0		3		4	
	गिन	तक	तेटे	कत	गदि	गन	धा	कते	टेत	गिन	तक	
	X		0		2		0		3		4	
	तेटे	कत	गदि	गन	धा	कते	टेत	गिन	तक	तेटे		
		X		0		2		0		3		
	कत	गदि	गन	धा								
		4		X								

(2)	धागे	तेटे	तेटे	धागे	तेटे	तेटे	धागे	तेटे	क्रिधे	तेटे	नागे	तेटे
	X		0		2		0		3		4	
	धा	S	क्रिधे	तेटे	नागे	तेटे	धा	S	क्रिधे	तेटे	नागे	तेटे
	X		0		2		0		3		4	
	धा											

चारताल का परन

(1)	धागेतेटे	धागेतेटे	तागेतेटे	तागेतेटे	क्रिधेतेटे	नागेतेटे	क्रिधे	तेटे
	X		0		2		0	
	नागे तेटे	धेधे तेटे	नागेतेटे	कतेटेत	गिनतक	तेटेकत		
		3		4		X		
	गदिगन	धा	कतेटेत	गिनतक	तेटेकत	गदिगन		
		0		2		0		
	धा	कतेटेत	गिनतक	तेटेकत	गदिगन	धा		
		3		4		X		

(2)	धागेतेटे	तेटे धागे	तेटे तेटे	धागे तेटे	धागे तेटे	तेटे धागे
	X		0		2	
	तेटे तेटे	धागे तेटे	तकधुम	किटतक	गदिगन	धाऽगदि
	0		3		4	
	गिनधाऽ	गदिगन	धा	गदिगन	धाऽगदि	गनधाऽ
	X		0		2	
	गदिगन	धा	गदिगन	धाऽगदि	गनधाऽ	गदिगन
	0		3		4	
	धा					
	X					

सूलताल का टुकड़ा

(1)	धेधे तेटे	धागे तेटे	तिनाकता	धिना कता	धा	तिनाकता
	X		0		2	
	धिनाकता	धा	तिनाकता	धिना कता	धा	
	3		0		X	

(2)	कतिरकिटधे	तेटेकत	कतिरकिटधे	तेटेकत	कतकत	कतकत
	X		0		2	
	कतिरकिटधे	तेटेकत	धाऽकत	धाऽकत	धा	कतिरकिटधे
	3		0		X	
	तेटेकत	धाऽकत	धाऽकत	धा	कतिरकिटधे	तेटेकत
	0		2		3	
	धाऽकत	धाऽकत	धा			
	0		X			

सूलताल का परन

(1)	धागेतेटे	धागेतेटे	क्रिधेतेटे	नागेतेटे	गदिगन	नागेतेटे
	X		0		2	
	कतेटेत	गिनतक	तेटेकत	गदिगन	धा	कतेटेत
	3		0		X	
	गिनतक	तेटेकत	गदिगन	धा	कतेटेत	गिनतक
	0		2		3	
	तेटेकत	गदिगन	धा			
	0		X			

(2)	धागेतेटे	तेटेधागे	तेटेतेटे	तेटेतेटे	धागेतेटे	तेटेधागे
	X		0		2	
	धागेतेटे	तेटेधागे	तेटेतेटे	धागेतेटे	तागेतेटे	धाधा
	3		0		X	
	धा	धागेतेटे	तागेतेटे	धाधा	धा	धागेतेटे
	0		2		3	
	तागेतेटे	धाधा	धा			
	0		X			

प्रश्न और अभ्यास :

- (1) तीनताल में एक कायदा दो पल्टे एवं एक तिहाई के साथ लिखें।
- (2) कहरवा-ताल में दो लग्नी लिखें।
- (3) दोहरा ताल में दो लड़ी लिखें।
- (4) चारताल में एक टुकड़ा तथा एक परन लिखें।
- (5) सूलताल में एक टुकड़ा तथा एक वरन ताली, खाली, विभाग दिखाते हुये लिखें।

(5) **बनारस घराना** : बनारस घराना के सर्वप्रथम तबला वादक पं० राम सहाय जी लखनऊ के उ० मोदू खाँ के शिष्य थे। उनके भाई पं० गौरी सहाय के पुत्र पं० भैरोसहाय तथा पौत्र पं० बलदेव सहाय तथा प्रपौत्र पं० दुर्गा सहाय प्रसिद्ध तबला वादक हुये। बनारस के पं० कंठे महाराज पं० बलदेव सहाय के शिष्य थे। पं० कंठे महाराज के भतीजे पं० किशन महाराज का नाम प्रसिद्ध तबला वादक के रूप में याद किया जाता है। पं० बाचा मिश्र के पुत्र पं० सामता प्रसाद उर्फ गोदई महाराज को भारत का बच्चा-बच्चा जानता है। ना धिंधिना के बादशाह पं० अनोखे लाल मिश्र पं० भैरो मिश्र के शिष्यों में अग्रगण्य थे। इसी तरह बनारस घराने में अनेक विद्वान पैदा हुये।

(6) **पंजाब घराना** : अभी तक के पाँचों घराने एक दूसरे से सम्बद्ध हैं जिनका उद्गम दिल्ली घराना ही है। पंजाब घराना अपने-आप में स्वतंत्र घराना है। यहाँ हुसैन बख्श तथा उनके पुत्र उ० फकीर बख्श तालशास्त्र के विद्वान थे। फकीर बख्श के शिष्य करमइलाही तथा मलन खाँ साहब और पुत्र उ० कादिर बख्श प्रसिद्ध तबलची थे। उनके शिष्य प्रसिद्ध तबला वादक उ० अल्लारखाँ हैं। उ० अल्लारखाँ खाँ के पुत्र श्री जाकिर हुसैन आज के प्रसिद्ध तबला वादकों में एक हैं।

प्रश्न और अभ्यास :

1. घराना शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुये दिल्ली घराना के उस्तादों का नाम बतावें।
2. घराना शब्द पर प्रकाश डालते हुए किन्हीं दो घराना का वर्णन करें।
3. बनारस घराने एवं पंजाब घराने के तबला वादकों का नाम लिखें।
4. घरानों की उत्पत्ति के बारे में अपनी विचार रखें।

अल्लारखा खाँ



उस्ताद अल्लारखा खाँ

विश्व प्रसिद्ध तबला-वादक अल्लारखा खाँ के नाम से प्रायः सभी संगीत-प्रेमी परिचित हैं। इनका जन्म जम्मू के फगवाल नामक गाँव में 29 अप्रैल सन् 1919 ई० को हुआ। ये बाल्यावस्था से ही तबले की ओर आकर्षित थे। इनका बचपन चाचा के साथ पंजाब के गुरदासपुर में गुजरा। इनके पिता का नाम हाशिमअली था, जो एक किसान थे। इनकी मुलाकात पंजाब घराने के मियाँ कादिर बख्श के साथ हुई जिन्होंने संगीत के क्षेत्र में अल्लारखा खाँ के लिए प्रेरणा स्रोत का काम किया। इन्होंने “राग विद्या” पटियाला घराना के उस्ताद आशिक अली खाँ से सीखा। तबले के प्रति अत्यधिक लगाव, समर्पण तथा मेहनत के कारण इन्हें तबले की अच्छी तालिम प्राप्त हो सकी।

इन्होंने संगीत पेशे की शुरुआत लाहौर से की। तत्पश्चात् ऑल इंडिया रेडियो (मुम्बई) में सन् 1940 ई० में स्टाफ कलाकार के रूप में रहे। चार-पाँच वर्ष के पश्चात् इन्होंने फिल्म क्षेत्र से संपर्क किया और कुछ फिल्मों में संगीत-निर्देशन का कार्य भी किया।

सन् 1960 ई० में इनका संपर्क पं० रविशंकर से हुआ और इन दोनों ने पश्चिम में अपने प्रदर्शन से दर्शकों को हिन्दुस्तानी संगीत से मंत्रमुग्ध कर दिया। इन्होंने कर्नाटक संगीत और हिन्दुस्तानी संगीत को जोड़ने में एक पुल का काम किया है। इनका भारतीय तबला-वादन के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इनका तबला वादन पंजाब घराने से है। बेमिसाल तैयारी और सफाई इनकी वादन शैली का एक विशेष गुण था। इनको दूसरे दिग्गज कलाकारों के साथ संगति करने का भी गौरव प्राप्त है। इनके पुत्र जाकिर हुसैन भी तबला के प्रसिद्ध कलाकार के रूप में विख्यात है।

पं० राम प्रवेश सिंह



पं० राम प्रवेश सिंह

बिहार के सुप्रसिद्ध तबला वादक पं० राम प्रवेश सिंह का जन्म पटना जिले के विक्रम थाना अंतर्गत ग्राम दादूपुर में 16 अप्रैल सन् 1923 ई० में एक किसान-परिवार में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री हरिनन्दन सिंह एवं माताजी का नाम श्रीमती दुलारी देवी था। बाल्यकाल से ही कला के प्रति इनमें अलौकिक आस्था थी। कला की खोज में सर्वप्रथम खासपुर (दानापुर) निवासी श्री यमुना राम से इनका संपर्क हुआ और तबले की प्रारंभिक शिक्षा उन्हीं से प्राप्त हुई। तत्पश्चात् जमीरा निवासी श्री शत्रुंजय प्रसाद सिंह उर्फ ललन बाबू के सम्पर्क में आये और तबले की बारीकियों को जानने, सुनने एवं सीखने का अवसर मिला। ललन बाबू के यहाँ देश के बड़े-बड़े कलाकारों का प्रदर्शन अक्सर होते रहता था। वहीं अजराड़ा घराना के उस्ताद हनीबद्दीन खाँ से सम्पर्क हुआ और उनसे तबला सीखने की इच्छा जाहिर की। उस्ताद ने इनकी सेवा भक्ति देखकर अपने यहाँ आने का वचन दे दिया। लगभग तीन वर्षों तक उस्ताद से अजराड़े घराने की बारीकियों को सीखते रहे। इसके पश्चात् भी तबला सीखने की प्यास नहीं बुझी। ज्ञान की खोज में वे कलकत्ता के जाने माने संगीतज्ञ पद्म विभूषण पं० ज्ञान प्रकाश घोष एवं कन्हैया दत्त जैसे दिग्गज कलाकारों के सम्पर्क में आये और जीवन पर्यन्त उनलोगों से तबला सीखते रहे।

पंडित जी 23 वर्षों तक पटना विश्वविद्यालय के अंतर्गत मगध महिला कॉलेज के संगीत विभाग में कार्यरत रहे। पं० जी आकाशवाणी पटना से भी उच्च ग्रेड कलाकार के रूप में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहे।

1966 ई० में पंडित जी गुवाहाटी रेडियो में विधिवत स्टॉफ कलाकार के रूप में 13 वर्षों तक कार्यरत रहे। दरभंगा में रेडियो स्टेशन खुला तो वे दरभंगा में स्थानांतरित हो गये।

इनके प्रमुख शिष्यों में श्री सिद्धेश्वर शर्मा, सूर्यदेव सिंह, शंभूनाथ मस्ताना, पारस नाथ मिश्रा, देवेन्द्र शर्मा, श्याम सुन्दर, राजशेखर, धवल जी, सुदर्शन शर्मा, सुधीर कुमार (पौत्र) आदि थे।

पंडित जी ने जिन कलाकारों के साथ संगति की है उनमें से प्रमुख निखिल बनर्जी, अमीर खाँ साहब, वी० जी० जोग, मनोज शंकर, गुलाम मुस्तफा, बहादुर खाँ, बेगम अख्तर,

मणिलाल नाग, पं० सियाराम तिवारी, पं० रामचतुर मल्लिक, पं० विदुर मल्लिक, भुनेश्वर दयाल, बलराम पाठक, गंगाधर पाठक आदि थे। पंडित जी पेशेवर कलाकार नहीं थे। वे कला के सच्चे पुजारी थे। अपने शिष्यों को मुफ्त में शिक्षा प्रदान करते थे। तबला वादन के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे सचमुच में कला के एक सच्चे पुजारी एवं सफल साधक थे। इनका स्वर्गवास 11 जनवरी 2003 ई० को हो गया।

प्रश्न और अभ्यास :

1. उस्ताद अल्लारक्खा खाँ की जीवनी लिखें।
2. पं० राम प्रवेश सिंह की जीवनी लिखें।

THESE ARE THE RESULTS THAT

वन्दे मातरम्

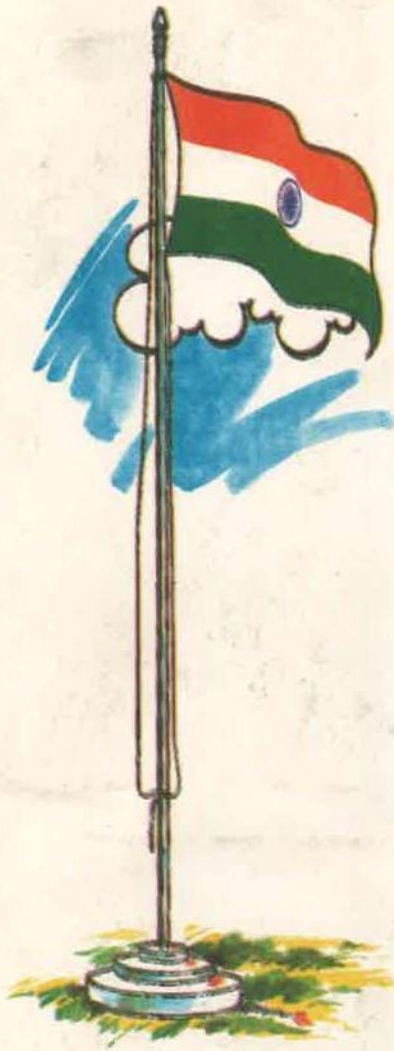
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम् ।

वन्दे मातरम् ॥

शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम् ।

वन्दे मातरम् ॥





राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।



बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना-1
BIHAR STATE TEXT BOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक : नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स, कुन-कुन सिंह लेन, पटना-800 005